कृषि कैलेण्डर

सब कुछ इन्तजार कर सकता है, परन्तु कृषि नहीं... पं. जवाहर लाल नेहरू

माह	विवरण
जनवरी पौष-माघ	✪ गेहूँ में फुटान या तने में गांठ बनने की अवस्था पर सिंचाई करें ✪ गेहूँ व जौ फसल में निराई-गुड़ाई करें ✪ चने में फली छेदक कीट की रोकथाम करें ✪ सरसों की फलियों में दाना बनते समय सिंचाई करें ✪ चेंपा की रोकथाम हेतु उपयुक्त कीटनाशी का छिड़काव करें ✪ फसलों को पाले से बचाने हेतु सिंचाई या धुंआ करें अथवा गन्धक के तेजाब का 0.1 प्रतिशत घोल का छिडकाव करें ✪ फलदार पेड़ों व सब्जियों में पाले से बचाव हेतु वायुरोधी टाटियां लगायें, थावलों में पानी दें ✪ टमाटर फसल हेतु नर्सरी तैयार करें (जायद की फसल हेतु) ✪ प्याज की फसल में सिंचाई एवं नाइट्रोजन उर्वरक का प्रयोग करें ✪ कद्दू वर्गीय सब्जियों की अगेती फसल हेतु पॉलीबेग में बुवाई करें ✪ अमरूद की हल्की सिंचाई करें एवं उर्वरक दें ✪ नींबू वर्गीय पोधो में डाईबेक रोग व कीटो की रोकथाम करें ✪ पपीते में रस चूसने वाले कीटो की रोकथाम करें एवं खरपतवार निकालें ✪ मैथी, धनियाँ में मोयला, चेपा, हरा तेला कीट की रोकथाम करें ✪ मटर में फली छेदक तना मक्खी, कीट एवं छाछ्या रोग की रोकथाम करें।
फरवरी माघ-फाल्गुन	✪ गेहूँ में बालियाँ आने की अवस्था पर सिंचाई अवश्य करें। ✪ गेहूँ व जौ की खड़ी फसल में दीमक एवं चूहा नियंत्रण के कार्य करें। कण्डवा ग्रस्त बालियों को निकालें। जंगली जई व गुल्ली डण्डा (फेलेरिस) के पौधों को बीज बनने से पूर्व निकाल दें ✪ चने में फली छेदक कीट की रोकथाम करें। फली छेदक कीट प्रबंधन हेतु मांसाहारी चिड़ियों को आकर्षित करने के लिए लगभग 200 लकड़ियों (शाखाओं वाली) की खपचियां प्रति हेक्टर की दर से चना की फसल से 10-20 सेमी. अधिक ऊँचाई में लगायें ✪ बैंगन, भिण्डी, टमाटर में मकडी, थ्रिप्स, सफेद मक्खी एवं छाछ्या रोग की रोकथाम करें। बैंगन व मिर्च की नई फसल हेतु रोपणी तैयार करें ✪ कद्दूवर्गीय सब्जियाँ, भिण्डी, पालक, ग्वार, चंवला की बुवाई करें ✪ जौ में दाने की दुधिया अवस्था पर सिंचाई करें ✪ सरसों में मोयला कीट एवं सफेद रोली, झुलसा एवं छाछ्या रोग की रोकथाम करें। फलियों में दाना बनते समय सिंचाई करें ✪ नींबू जाति के पौधो में डाईबेक व कीटो की रोकथाम करें। आवश्यकतानुसार सूक्ष्म तत्वों का छिड़काव करें ✪ मैथी व धनिया की फसल की चेपा एवं छाछ्या रोग से सुरक्षा करें ✪ मटर में फली छेदक एवं छाछ्या रोग से रोकथाम करें।
मार्च फाल्गुन-चैत्र	✪ गेहूँ में दानें की दुधिया अवस्था पर एवं दाना पकते समय सिंचाई करें ✪ गेहूँ व जौ की फसल में दीमक एवं चूहा नियंत्रण कार्य करें एवं कण्डवा ग्रस्त बालियों को निकालें तथा नष्ट कर दें ✪ जायद मूंग की बीजोपचार कर बुवाई करें ✪ प्याज में थ्रिप्स की रोकथाम करें ✪ टमाटर में सिंचाई के समय नाइट्रोजन उर्वरक दें ✪ कद्दूवर्गीय सब्जियों की सिंचाई करें एवं सिफारिश अनुसार नाइट्रोजन उर्वरक प्रयोग करें ✪ कद्दूवर्गीय सब्जियों की बुवाई करें ✪ भिण्डी की उन्नत किस्मों-परमनी क्रांति, अर्का अनामिका व अर्का अभय की बुवाई करें ✪ खलिहानों में थ्रेशर दुर्घटना से बचें ✪ खेत एवं खलिहानों में चूहों की रोकथाम करें। ✪ ग्रीष्मकालीन हरे चारे के लिये ज्वार, बाजरा-लोबिया की बुवाई करें। ✪ पपीते में रस चूसने वाले कीटों की रोकथाम करें। ✪ फलत वाले आम व अनार में नाइट्रोजन की शेष आधी मात्रा देवे।
अप्रैल चैत्र-वैशाख	✪ बे-मौसम की वर्षा से होने वाले नुकसान से बचने के लिए फसलों की कटाई, गहाई एवं मड़ाई शीघ्र करें ✪ ग्रीष्मकालीन फसलों में आवश्यकतानुसार सिंचाई करें ✪ खाली खेतों मे गर्मी की जुताई करें ✪ टमाटर, बैंगन तथा कद्दूवर्गीय (बेल वाली) कुल की सब्जियों में फल मक्खी एवं छाछ्या की रोकथाम करें ✪ थ्रेशर पर कार्य करते समय दुर्घटना से बचाव हेतु सावधानियाँ बरतें ✪ अनाज के सुरक्षित भण्डारण हेतु पुरानी कोठियों की भली-भांति सफाई कर कीटनाशी से उपचारित करें ✪ खरीफ की फसल हेतु मिट्टी के नमूने की जाँच हेतु मिट्टी परीक्षण प्रयोगशाला में भिजवायें ✪ देशी बेर की झाड़ियों को कलमी बेर में बदलने हेतु कटाई करें ✪ मिर्च की तैयार पौध की रोपाई करें व प्रारम्भिक उर्वरकों को प्रयोग करें।
मई वैशाख-ज्येष्ठ	✪ जायद फसलों में सिंचाई करें ✪ जायद मौसम की (ग्रीष्मकालीन) हरे चारे की फसलों में 8-10 दिन के अन्तराल पर सिंचाई करें व नाइट्रोजन उर्वरक दें। ✪ जायद मूंग में चटखने से बचाव हेतु तुड़ाई करें ✪ टमाटर, बैंगन, मिर्च में सिंचाई एवं नाइट्रोजन उर्वरक का प्रयोग करें। ✪ खरीफ प्याज हेतु नर्सरी तैयार करें ✪ कद्दूवर्गीय सब्जियों में फल मक्खी का नियंत्रण करें। ✪ खाली खेतों में गर्मी की जुताई करें। ✪ फलदार पौधो में आवश्यकतानुसार सिंचाई करें। ✪ पपीता की नर्सरी तैयार करें व 5-7 से.मी. ऊंची रोप को पॉलीथिन थैली में बदल दें। ✪ बेर के बडे पेड़ो की कटाई-छटाई करें। ✪ बगीचे हेतु रेखांकन कर गड्ढो की खुदाई करें। ✪ मूली किस्म पूसा चेतकी की बुवाई करें ✪ ज्वार, मक्का, लोबिया हरे चारे हेतु लगावें। ✪ भू-एवं जल सरंक्षण हेतु मेडबन्दी एवं अन्य कार्य करें। ✪ देशी बेर की कटी हुई झाडियों की नई फुटान पर उन्नत किस्मो की कलिकाएँ चढायें। (अंतिम सप्ताह)
जून ज्येष्ठ-आषाढ़	✪ खरीफ फसलों की बुवाई हेतु खेत की तैयारी करें उन्नत बीज, खाद आदि की अग्रिम व्यवस्था करें। ✪ दीमक व सफेद लट की रोकथाम हेतु भूमि एवं बीज जनित रोगों से बचाव हेतु बीजोपचार के बाद ही बुवाई करें। ✪ मौसम की पहली अच्छी वर्षा होते ही मक्का व ज्वार की बुवाई करें ✪ वर्षाऋतु की सब्जियों की बुवाई करें ✪ बैंगन, टमाटर, खरीफ प्याज, अगेती फूलगोभी व मिर्च की पौध तैयार करें (खरीफ फसल हेतु) ✪ बैंगन, टमाटर व मिर्च में मोयला, सफेद मक्खी व हरा तेला, फल व तना छेदक कीट की रोकथाम करें। ✪ क्षारीय भूमि सुधार हेतु सिफारिश के अनुसार जिप्सम का प्रयोग करें। ✪ सिंचित मक्का एवं मूँगफली की बुवाई इसी माह के मध्य तक करें। ✪ हरे चारे की फसलो की प्रथम कटाई, बुवाई के 50-55 दिन बाद करें। ✪ छोटे फलदार पौधो को लू से बचाने हेतु टाटियाँ बांधे। ✪ देशी बेर की कटी हुई झाडियों की नई फुटान पर उन्नत किस्मो की कलिकाएँ चढायें। (पहला एवं दूसरा सप्ताह) ✪ अमरूद व अनार के पौधे में उम्र के हिसाब से खाद व नाइट्रोजन उर्वरक दें।
जुलाई आषाढ़-श्रावण	✪ वर्षा होने पर मक्का, ज्वार व बाजरा की बुवाई, बीजोपचार कर करें ✪ दलहनी फसलों में बीजोपचार कर वर्षा शुरू होने पर बुवाई करें ✪ टमाटर, बैंगन, मिर्च एवं अगेती फूलगोभी की पौध की खेत में रोपाई कर हल्की सिंचाई करें ✪ लौकी, कद्दू के बीज बुवाई के लिये 3 मीटर चौड़ी क्यारियां बनाकर बुवाई करें ✪ वर्षा होने पर खरीफ फसलों व सब्जियों की बुवाई करें ✪ कद्दूवर्गीय सब्जियों की खेत में प्रारम्भिक उर्वरक डाल कर बुवाई करें ✪ मक्का व ज्वार के साथ मूँग, चवला या सोयाबीन की मिश्रित फसल लेवें। ✪ मक्का व ज्वार की फसल को एक माह तक खरपतवारों से मुक्त करें व अनुकूलतम पौध संख्या करें ✪ तिल की बुवाई वर्षा होते ही करें ✪ कातरा कीट की रोकथाम करें ✪ बगीचे हेतु तैयार गड्ढो में फलदार पौधे लगायें ✪ बेर में कलिकायन का कार्य करें ✪ अमरूद में तना छेदक एवं फल सड़न की रोकथाम करें ✪ सफेद लट की रोकथाम हेतु भूमि उपचार करें।
अगस्त श्रावण-भाद्रपद	✪ अनाज वाली खड़ी फसलों में नाइट्रोजन की शेष मात्रा देवें ✪ निराई-गुड़ाई कर खरपतवार निकालें एवं तना छेदक कीट का नियंत्रण करें। सूखे की स्थिति में एक छोड़ कर एक कतार उखाड़ दें व उसे चारें के रूप में काम लें ✪ सभी दलहनी दालो में बुवाई में 30 दिन के अन्दर निराई गुडाई पूर्ण कर ले ✪ देर से वर्षा होने पर दलहनों की बुवाई करनी चाहिए ✪ बेर बडिंग का कार्य नहीं किया हो तो पूर्ण करें ✪ पपीता में तना सड़न की रोकथाम करें ✪ आंवला में नाईट्रोजन उर्वरक की शेष आधी मात्रा देवें ✪ फूल गोभी की मध्यकालीन किस्मो की नर्सरी तैयार करें ✪ सब्जियों की फसल में कीट, रोग नियंत्रण हेतु पौध संरक्षण उपाय अपनायें ✪ भिण्डी व खरीफ प्याज में उर्वरक दे। सिंचाई एवं निराई-गुड़ाई करें ✪ हरे चारे की अधिकता होने पर ''हे'' और ''साइलेज'' बनावें।
सितम्बर भाद्रपद-अश्विन	✪ पत्तागोभी, फूलगोभी एवं बसन्तकालीन बैंगन एवं टमाटर की पौध तैयार करें। (सर्दी/रबी की फसल हेतु) ✪ सब्जियों में खरपतवार निकालें एवं नाइट्रोजनधारी उर्वरक देकर सिंचाई करें। ✪ भिण्डी, टमाटर एवं बैंगन में फल छेदक का नियंत्रण करें ✪ तिल की फसल में पत्ती व फली छेदक कीट नियन्त्रण करें ✪ ग्वार की फसल में मोयला, सफेद मक्खी, हरा तेला की रोकथाम करें ✪ सरसों की बुवाई के लिये उपयुक्त किस्म के प्रमाणित बीज काम में लेवें। बुवाई माह के अन्तिम सप्ताह में निर्धारित मात्रा में उर्वरक को ऊर कर करें ✪ हरे चारे की अधिकता होने पर सुखा के संरक्षित करें या ''साइलेज'' बनावें ✪ अमरूद में शेष नाईट्रोजन की मात्रा देवें।
अक्टूबर अश्विन-कार्तिक	✪ पत्तागोभी, फूलगोभी एवं बसन्तकालीन बैंगन एवं टमाटर की पौध तैयार करें। (सर्दी/रबी की फसल हेतु) ✪ चने व सरसों की मिश्रित फसल लें ✪ लहसुन की बुवाई करें ✪ फूलगोभी, पत्तागोभी, टमाटर व बैंगन की पौध रोपाई करें ✪ उर्वरकों को खाने-पीने की जगह, पशु घर व बच्चों की पहुँच से दूर रखें ✪ बारानी क्षेत्र में सरसों की बुवाई 15 अक्टुबर तक एवं सिंचित क्षेत्र में इस माह के अन्त तक उपयुक्त किस्म का बीजोपचार कर बुवाई करें ✪ सरसों के अकुंरण के 7-10 दिन के अन्दर आरा-मक्खी, पेन्टेड बग का नियन्त्रण करें। निराई-गुडाई एवं छंटाई कर सरसों के पौधे से पौधे की दूरी 8-10 से.मी.रखे ✪ चने की बुवाई सिंचित अवस्था में 15 अक्टुबर तक बीजोपचार कर करें ✪ जौ की बुवाई के लिये उन्नत किस्म के प्रमाणित बीजो का प्रयोग करें। समस्याग्रस्त क्षेत्रों में मध्य अक्टुबर तक बुवाई करें ✪ मोल्या ग्रस्त क्षेत्रो में जौ की आर.डी 2055, आर.डी. 2052 किस्म काम में लें ✪ नींबु वर्गीय पौधो में चूसक कीटो का नियन्त्रण करें ✪ बेर में छाछ्या रोग की रोकथाम हेतु घुलनशील गंधक को 4 ग्राम लीटर पानी में घोल कर छिड़काव करें ✪ बरसीम, जई, रिजका, हरे चारे हेतु बोये।
नवम्बर कार्तिक-मार्गशीर्ष	✪ गेहूँ की उपयुक्त किस्मों की बुवाई बीजोपचार कर करें ✪ फसल अंकुरित होते समय चूहा नियंत्रण के उपाय अपनायें ✪ चने की फसल में सिंचाई उपलब्ध हो तो प्रथम सिंचाई 40-50 दिन पर करें ✪ रबी मक्का की बुवाई प्रथम पखवाड़े तक करें ✪ बैंगन की बसन्तकालीन फसल की रोपाई करें ✪ टमाटर की फसल में निराई-गुड़ाई कर खरपतवार निकालें ✪ प्याज की बुवाई करें। ✪ लहसुन की उन्नत किस्में एग्री फाउन्ड पार्वती, एग्रीफाउन्ड सफेद, यमुना सफेद-2, जी. 4 व जी-323 की बुवाई करें ✪ लहसुन की बुवाई हेतु लहसुन प्लान्टर को उपयोग में लें ✪ जौ की अच्छी उपज के लिये बुवाई इस माह के प्रथम पखवाडे तक पूर्ण कर लें ✪ पूर्व में बोई गयी जौ की फसल में पहली सिंचाई 30-35 दिन में करें व प्रथम सिंचाई के 10-12 दिन के अन्दर एक बार निराई-गुडाई अवश्य करें ✪ सरसो में पहली सिंचाई फूल आने से पूर्व करें। नाईट्रोजन की शेष आधी मात्रा सिंचाई के साथ दें ✪ आम में थावलों की सफाई करें तथा बगीचों में निराई-गुडाई व सिंचाई करें ✪ बेर में नाईट्रोजन उर्वरक दें।
दिसम्बर मार्गशीर्ष-पौष	✪ गेहूँ की पिछेती किस्मों की बुवाई इस माह के प्रथम पखवाड़े तक करें। खड़ी फसल में नाइट्रोजन सिफारिश अनुसार देवे। प्रथम सिंचाई शीर्ष जड़ जमने एवं दूसरी सिंचाई फुटान के समय करें। ✪ देर से बुवाई के लिए बीज की मात्रा 25 प्रतिशत तक बढ़ा लेवें। ✪ फसलों को पाले से बचाने हेतु सिंचाई करें, धुआं करे या गन्धक के तेजाब का 0.1 प्रतिशत घोल का 15-20 दिन के अन्दर छिड़काव करें। ✪ प्याज की तैयार पौध की रोपाई करें, रोपाई से पूर्व खाद एवं प्रारम्भिक उर्वरकों का उपयोग करें। ✪ टमाटर की गर्मी की फसल हेतु नर्सरी तैयार करें।(जायद की फसल हेतु) ✪ बैंगन में फूल लगने के समय 20-25 कि.ग्रा. नाइट्रोजन प्रति हेक्टर का छिड़काव करें। ✪ चना में फली छेदक कीट की रोकथाम करें ✪ सरसों में सिंचाई उपलब्ध हो तो 70-80 दिन में करें एवं मोयला कीट की रोकथाम करें ✪ पपीता में निराई-गुड़ाई व सिंचाई करें व पौधो में नाइट्रोजनधारी उर्वरक दें ✪ नींबू वर्गीय फल, अमरूद, अनार व अगूंर के वृक्ष में पौधे की उम्र के हिसाब से खाद व उर्वरक दें ✪ मटर में पहली सिंचाई बुवाई के 4-5 सप्ताह बाद 12-15 दिन के अन्तर से करें व निराई-गुडाई करें।

प्रकाशक : गायत्री सेवा संस्थान, उदयपुर सौजन्य : IGWDP, नाबार्ड, राजस्थान